227

समकालीन भारतीय साहित्य

साहित्य अकादेमी की द्विमासिक पत्रिका

मई-जून, 2023

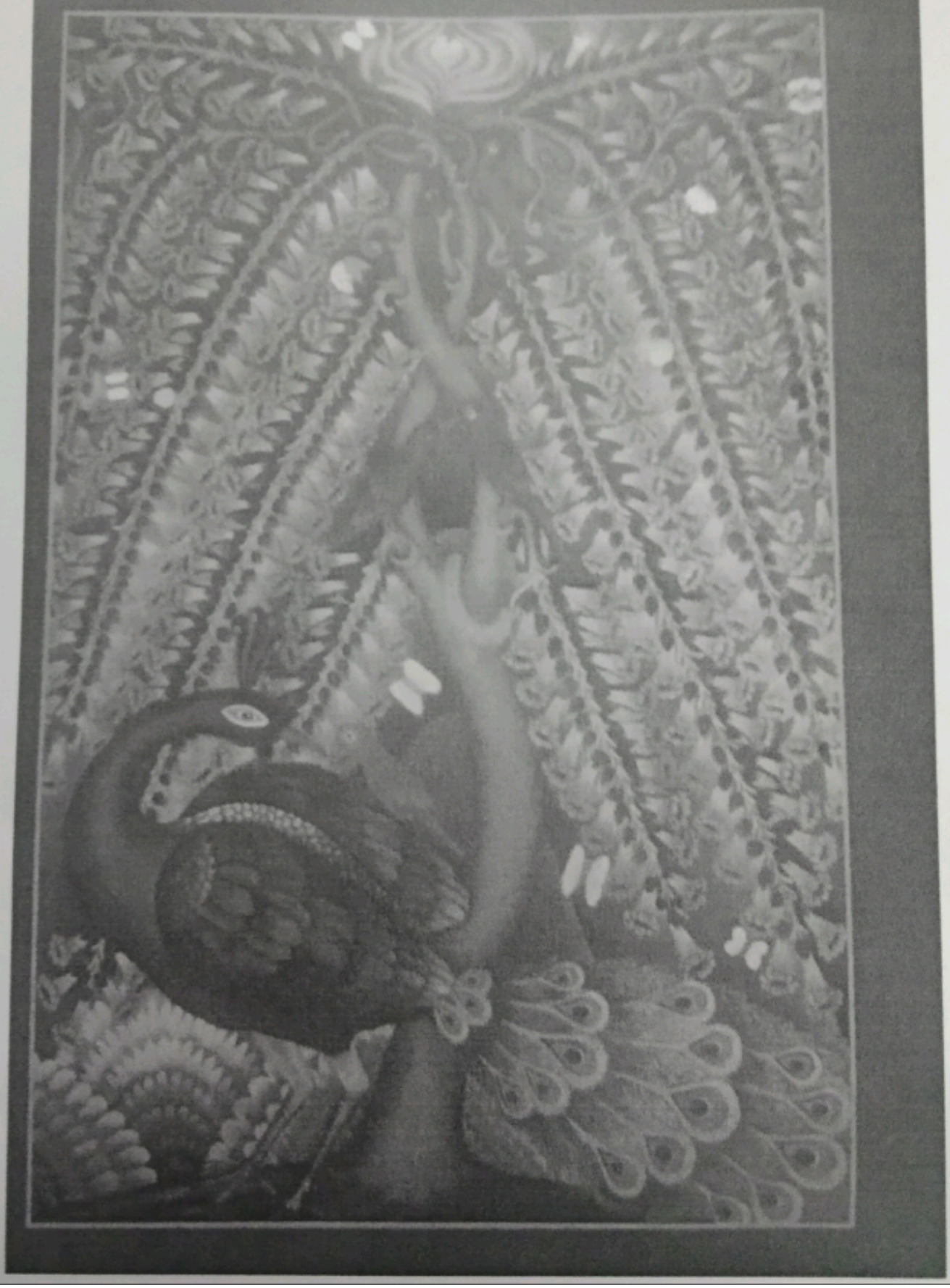

विजय शर्मा

नोबेल पुरस्कार और एशियाई देश

नेहा तिवारी

साहित्य सृजन के प्रारूपों से विधाओं का निर्माण होता है, पर विधाओं पर विचार करके साहित्य रचा जाएगा, ऐसा कहने और करने से हम साहित्य को बाँध देते हैं और नवीनता व प्रयोग के दायरे को सीमित कर देते हैं। साहित्य के तो जन्म में ही स्वतंत्रता, स्वच्छंदता और स्वाभिमान है। ऐसे में विधाओं की बंदिश से किसी साहित्य को बाँधने की कोशिश करना न्यायोचित नहीं।

'नोबेल पुरस्कार : एशियाई संदर्भ' पुस्तक सुप्रसिद्ध आलोचक, शिक्षक, समीक्षक विजय शर्मा की एक ऐसी पुस्तक है, जो गद्य के क्षेत्र में विषय और विधा की दृष्टि से एक नवीनता का एहसास कराती है। हिंदी साहित्य में ऐसे काम विरले ही देखने को मिलते हैं, जहाँ वस्तुनिष्ठ जानकारी और व्यक्तिगत टिप्पणियों का संतुलित समन्वयन हो। ऐसा भी कम ही देखने को मिला है, जहाँ पर लेखक द्वारा अन्य लेखकों और उनकी कृतियों पर प्रचुर सामग्री तो उपलब्ध कराई ही जाए, उन्हें राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि से जोड़कर पाठकों के सामने कुछ इस तरह से प्रस्तुत किया जाए कि वह समग्र रूप से साहित्यकार, उसकी कृतियाँ और काल को समझ सकें और फिर अपनी समीक्षात्मक टिप्पणियों से एक वैचारिक बहस भी खड़ी की जाए। विजय शर्मा ने अपनी

135 लालित्य ललित : रोमांस का अजब किस्सा (व्यंग्य)

साक्षात्कार

142 रमेशचंद्र शाह से विकास कुमार पाठक की वार्ता

संस्मरण

150 प्रमथ राज सिंह : उन्होंने आजीवन हिंदी सेवा की

अवलोकन

155 सेवाराम त्रिपाठी : जीवन की संपूर्णता की तलाश
165 देवशंकर नवीन : वंचितों की अटूट आस्था का कलश
172 सुधांशु गुप्त : त्रासदी का बादशाह ऐसे क्यों गया
178 संजय कुमार सिंह : कथा पाठ का पाठकीय नजरिया
183 नेहा तिवारी : नोबेल पुरस्कार और एशियाई देश
190 अरुण कुमार : ओड़िया काव्य में स्त्री विमर्श

समीक्षा

196 कुसुमलता सिंह : अवध की जनक्रांति के नायक
200 दिलीप सिंह : गंभीर और प्राणवंत भाषा चिंतन
204 आनंदप्रकाश त्रिपाठी : यादों-मुलाकातों का कोलाज
208 प्रकाश कांत : प्रेम और देह के बीच स्त्री
212 अंजु रंजन : बेहद मार्मिक और पठनीय कहानियाँ
215 राजीव शर्मा : अपमान, प्रताड़ना और अकाल मौत
218 रेखा व्यास : नौकरशाही के विविध रंग

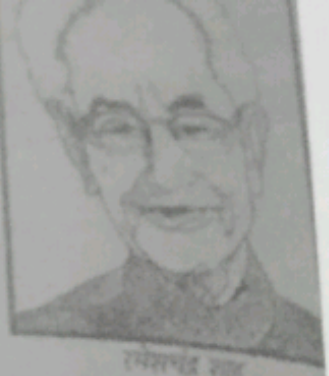

रमेशचंद्र शाह

उदय राज सिंह

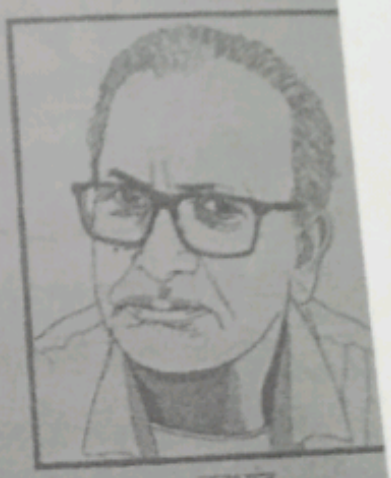

उद्भ्रांत

भगत सिंह

आवरण चित्र प्रतिष्ठित चित्रकार भगत सिंह का है, जो सिर्फ और सिर्फ प्रकृति, खासकर पेड़-पौधों और पत्तियों पर काम करते रहे हैं। तीन दशक से कला साधना में लीन भगत आमिया से एम.एफ.ए. हैं। सौ से अधिक कला प्रदर्शनियों में भाग ले चुके भगत सिंह की आधा दर्जन से अधिक एकल प्रदर्शनियाँ आयोजित हो चुकी हैं और दर्जनाधिक सम्मान-पुरस्कार भी उन्हें मिले हैं।

श्यौराज सिंह बेचैन

Regd. No. DELHIN/1980/1009

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित कृतियाँ

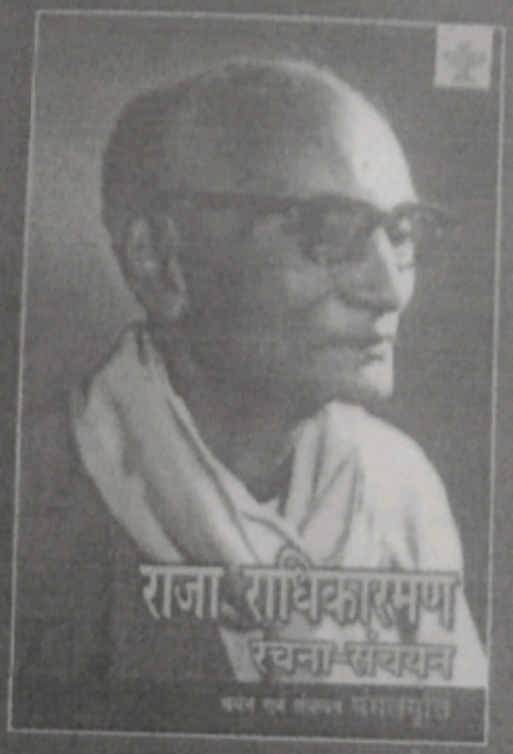

ISBN : 978-93-5548-434-5

मूल्य : ₹340/-

ISBN 978-93-5548-436-9

मूल्य : ₹300/-

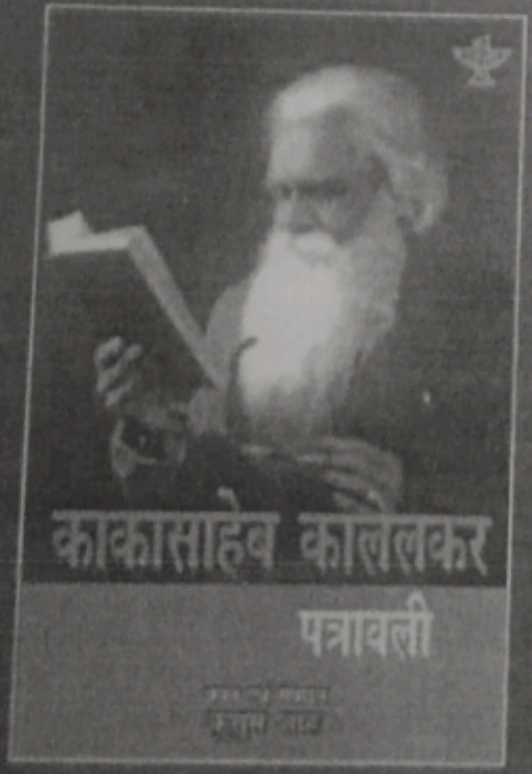

ISBN 978-93-5548-188-7

मूल्य : ₹200/-

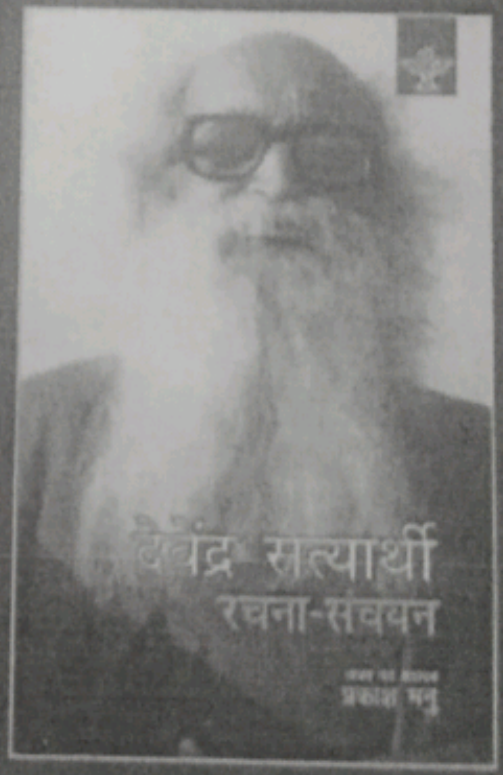

ISBN : 978-93-5548-447-5

मूल्य : ₹400/-

ISSN 0970-8367